युवाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन

प्रो० सुमन
प्रिन्सिपल
एस०एन० सेन बी०वी० पी०जी० कॉलेज, कानपुर

पूजा
शोधार्थिनी
समाजशास्त्र विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ
ईमेलः drpoojaariya1995@gmail.com

सारांश

वैश्वीकरण वैश्विक व्यापार का पर्याय नहीं है, बल्कि उससे कही अधिक है। वैश्वीकरण सभी समाजों के आर्थिक, सामाजिक और संस्कृतिक ताने–बाने मे विभिन्न प्रकार की जटिल प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करता है। हम एक गहन रूप से अन्योन्याश्रित दुनिया में रहते है। सेवाओं में अंतर्राष्ट्रीय लेन देन को अमूर्त वस्तुओं के आर्थिक उत्पादन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक ही समय में उत्पादित, स्थानांतरित और उपभोग किए जा सकते हैं। परंपरागत रूप से सेवाओं को घरेलू गतिविधियों के रूप में देखा जाता है क्योंकि उत्पादक और उपभोक्ता के बीच सीधा संपर्क और बुनियादी ढांचा क्षेत्र में सरकारी एकाधिकार है। उभरती डिजिटलकरण अवधारणा ने इस धारणा को बदल दिया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उदय ने ई–कॉमर्स, ई–बैंकिग, ई–लर्निंग, इमेडिसिन और ई–गवर्नेंस को जन्म दिया है। यह घरेलू स्तर पर एक सार्वजनिक वस्तु नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर और तकनीकी अर्थव्यवस्था में शामिल करने के लिए प्रमुख उपकरण होने की उम्मीद है। वैश्वीकरण का सबसे अधिक प्रभाव युवाओं पर देखने को मिला हैं। आज के दौर में आधुनिक प्रोद्योगिका का प्रयोग कर युवाओं की जीवनशैली में बड़े बदलाव देखने को मिल रहे है। आज परम्परागत ताना–बाना बिगड़ गया है तथा आज की युवा पीढ़ी का रहन–सहन खान–पीन एवं सोचने विचारने के तरीके तेजी से बदल रहे है प्रस्तुत लेख में इसका अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिन्दु

वैश्वीकरण, युवा रूपांतरण, प्रौद्योगिकी, डिजिटलीकरण इत्यादि।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 30.08.2023
Approved: 24.09.2023

प्रो० सुमन,
पूजा

वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी साक्षरता का अध्ययन

RJPP Apr.23-Sep.23,
Vol. XXI, No. II,

PP. 248-255
Article No. 34

Online available at:
https://anubooks.com/journal/rjpp

प्रस्तावना

वैश्वीकरण एक जटिल, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया है। यह दोधारी तलवार है। इसके फायदे और नुकसान दोनों हैं। इसने विकास की असीम सम्भावनाएँ उपस्थित की है, जबकि विनाश के पर्याप्त तत्व भी इसमें मौजूद हैं। ऐतिहासिक विकास के क्रम में इसे अपने हितों के अनुरूप ढालना हम सबका युग धर्म है।

समाज विज्ञान की दृष्टि से वैश्वीकरण की प्रक्रिया समय और दूरी का राष्ट्र राज्य से आगे संकुचन उत्पन्न करती है। वैश्वीकरण की वर्तमान धारा का उदारीकरण और निजीकरण से अभिन्न सम्बन्ध है। यह पूँजी, श्रम, उत्पाद, प्रौद्योगिकी और सूचना के जरिए आधुनिकीकरण, राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रों के बीच गठबन्धन निर्माण के साथ उत्पन्न हो रही है। परिष्कृत तात्कालिक संचारों और तीव्र यातायात एवं परिवहन ने इस प्रक्रिया की तीव्रता को और अधिक बढ़ाया है। वैश्वीकरण को एक प्रतीकात्मक स्वरूप में प्रतिष्ठित किया जा रहा है, जिसमें परिर्वतनशील दुनिया में मनुष्य बनने का एक नया तरीका उलब्ध कराने की वकालत की जा रही है। वैश्वीकरण राष्ट्र राज्य की सीमाओं को लौंघता हैं यह, सामानों के प्रवाह, लोग, पूँजी, सूचना, विचार प्रतिमानों और खतरों को राष्ट्र राज्य की समीओं और राजनीतिक संस्थाओं से ऊपर उठकर सामाजिक नेटवर्क और राजनीतिक संस्थाओं के साथ सम्बद्ध करने वाली एक प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में नये स्थान और समय में संस्कृतियों और समुदायों के एकीकरण और उसे जोड़ने वाले तथा दुनियाँ को एक हकीकत तथा अत्यधिक अन्तर्सबन्धित बनाने वाले अर्थ में वैश्वीकरण को देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण का अर्थ

वैश्वीकरण की व्याख्या करना बहुत कठिन है। कहीं सर्वसम्मति नहीं है। इस सम्बन्ध में हाथी और सात अंधो की कहानी बड़ी प्रासंगिक लगती है। अंधों को यह काम सौंपा गया कि वे हाथी को परिभाषित करें जिसका हाथ की सूंड पर पड़ा उसने परिभाषा दी कि हाथी किसी रस्सी के आकार का होता है, जिसने पांवों को परखा, कहा कि हाथी खम्भों जैसा होता है– और यह पुरानी कहानी हर अन्धे की परिभाषा के इर्द–गिर्द घूमती है। कुछ विचारक इसे एक आर्थिक अवाधारणा मात्र समझते हैं।

उनिवेशवाद के आरम्भ होने के साथ–साथ ही वैश्वीकरण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो गयी थी। दुनियाँ में सत्रहवीं शताब्दी में साम्राज्यवाद की एक नीति के रूप में उपनिवेशवाद आरम्भ हो गयी थी। दुनियाँ के तमाम देशों को अपनी कालोनी बना लिया था। उपनिवेदशवाद के अधीन देशों (कालोनियों) से कच्चा माल उपनिवेशवादी देशों में जाया करता था इससे औद्योगिक उत्पादन होता था उत्पादित माल पुनः खपत (बिक्री) हेतु उन्हीं कालोनियों में आया करते थे। इस प्रक्रिया में विश्व के बजारों के एकीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। इस प्रकार से उपनिवेशवाद के आरम्भ के साथ–साथ वैश्वीकरण का आरम्भ हो गया।

विद्वानों की दूसरी कोटि मानते हैं कि आधुनिक युग के विकास का मुख्य परिणाम दुनिया का एकीकरण था। अतः वैश्वीकरण की जड़े आधुनिकता में विद्यमान रही हैं। इस कोटि के विद्वान आधुनिकता में आयी तेजी को वैश्वीकरण के रूप में देखते हैं। आधुनिककरण का सम्बन्ध प्रौद्योगिकीय आविष्कारों तथा

औद्योगिक क्रान्ति से है। उपनिवेशवाद आधुनिकीकरण के बीच गहरा रिश्ता है, जो सम्पूर्ण विश्व पर आधुनिकता के प्रभावों के विस्तार के माध्यम से दुनियाँ को संकुचित कर रहा है अथवा नजदीक ला रहा है। ये विद्वान मानते हैं कि प्रौद्योगिकीय आविष्कारों के परिणाम स्वारूप सूचना प्रौद्योगिकी में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं जिसकी वजह से वैश्वीकरण को गति तथा ऊर्जा प्राप्त हो रही है। इस प्रकार से इस कोटि के विद्वान आधुनिकता में आयी तेजी को वैश्वीकरण के रूप में देखते हैं।

आधुनिकता की संस्थाओं के विस्तारवाद के संदर्भ में दुनिया के संपीड़न को समझाा जा सकता है, जबकि दुनिया की चेतना की प्रतिवर्ती गहनता को सांस्कृतिक दृष्टि से लाभकारी रूप से माना सकता है। शिक्षा न केवल किसी के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए बल्कि राष्ट्र के सतत विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। शिक्षा मानव पूंजी के निर्माण में एक महत्वपूर्ण निवेश है जो तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास के लिए एक चालक है किसी समाज की शैक्षिक स्थिति में सुधार करके ही उसके लोगों का बहुमुखी विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली मूल रूप से तीन घटकों से बनी है और वे प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा हैं। आज निजीकरण, वैश्वीकरण और उदारीकरण विस्तार, उत्कृष्टकता और समावेश भारतीय शिक्षा प्रणाली की तीन चुनौतियों है। पुरानी शिक्षा प्रणाली को सुधारना होगा।

साहित्य का अवलोकन

अनुसंधान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी भी क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित ज्ञान का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाये, ताकि महत्वपूर्ण तथ्य एवं निष्कर्ष सरलता से प्राप्त हो सकें। शोध का अर्थ सत्य की खोज तथा उन प्रश्नों के उत्तर खोजना है जो कि ज्ञात नहीं है। इसी कारण सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अति आवश्यक हो जाता है, यह अध्ययन शोधकार्य को आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है एवं प्रत्येक प्रत्यततः धारणा को स्पश्ट करता है। इससे यह आभास होता है कि लिया गया शोधकार्य किस सीमा तक सफल होगा तथा प्राप्त निष्कर्षों की क्या उपयोगिता होगी? यह प्राप्त कर शोधार्थिनी का आत्मविश्वास विकसित करता है। इसके द्वारा अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचा जा सकता है। साथ ही यह अनुसंधानकर्त्ता के ज्ञान, स्पष्टता तथा कुशलता को विकसित कर उसे त्रुटियों से बचाता है।

सुबोध कुमार शुक्ला वैश्वीकरण एवं औद्योगिक विकास का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव. 2020 मे नई आर्थिक नीति का अर्थ केवल विदेशी व्यापार या विदेशी पूँजी निवेश तक ही सीमित नहीं है। अर्थव्यवस्था के सभी अंगों में नियंत्रणों के स्थान पर उदारीकरण अपनाया जाये। नई आर्थिक नीति के प्रमुख अंग है–नई औद्योगिक नीति, राजकोशीय नीति, नई मौद्रिक नीति, विदेशी नीति, विनियम नियंत्रण नीति, नई व्यापार नीति आदि। वैश्वीकरण का सामान्य रूप से आशय पूरे विश्व का एक सत्ता के रूप में मानने से है, इसमें सभी आर्थिक बाधाओं को हटा दिया जाता है, जिससे कि बाजार शक्तियॉ स्वतंत्र रूप से अपनी भूमिका अदा कर सकें।

वेद प्रकाश तिवारी. महिला बीड़ी श्रमिकों पर वैश्वीकरण का प्रभाव–एक अध्ययन (रीवा नगर के संदर्भ में). 2019 मे बीड़ी उद्योग क्योंकि एक कुटीर उद्योग है इस कारण इस उद्योग में महिलाओ का योगदान अधिक होता है। तथा वह घर पर ही कच्चा माल लाकर बीड़ी निर्माण कार्य करती है।

महिला श्रमिको की स्थिति काफी शोचनीय है क्योंकि महिलाओं का विकास नही हो पाता तथा वह घर पर ही घरेलू कार्य करके इस कार्य को करने लगती है। तथा वह की दुनिया से अनभिज्ञ रहती है। इसी कारण वह आज भी पिछड़े लोगो में गिने जाते है। और ज्यादातर महिलाए अशिक्षित होती है। इसके साथ अशिक्षित महिलाए कम मजदूरी पर भी कार्य करती है क्योंकि उन्हे इस बात का ज्ञान नही होता है कि सरकार से मजदूरी कितनी निर्धारित कि है। और ठेकेदार इस बात का नाजायज फायद उठाता है। तथा कम मजदूरी में अधिक बीड़ी निर्माण करवाता है। छटनी में कई बीड़िया निकाल देता है।

दीपा देवांगन, के. एल. टांडेकर. ग्रामीण उद्योगों का आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका (राजनांदगाव जिले में खादी ग्रामोद्योग के अंतर्गत हथकरघा उद्योग के विशेष संदर्भ में)। 2018 मे प्रस्तुत शोधपत्र में ग्रामीण उद्योगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया हैं। यह अध्ययन खादी ग्रामोद्योग के हथकरघा उद्योग के विशेष संदर्भ में हैं। ग्रामोद्योग क्षेत्र के औद्योगिक विकास का मूलाधार है। यही वह क्षेत्र हैं जो दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों के औद्योगीकरण में महत्वपूर्ण योगदान देता हैं। इस क्षेत्र के माध्यम सें उत्पादित कुल कपड़े का लगभग 19 प्रतिशत का योगदान देश और निर्यात में भी आय के लिए काफी योगदान देता हैं। यह शोधपत्र ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक उन्नति लाने, खादी ग्रामोद्योग की गतिविधियों, क्रियाओं व प्रंबधन में परिवर्तन लानें व रोजगार–स्वरोजगार बढ़ानें हेतु शासकीय नीति निर्धारकों के लिए सहायक सिद्ध होगा।

राजेश अग्रवाल भारतीय अर्थव्यवस्था पर आर्थिक सुधारों का प्रभाव जुलाई 1991 में नरसिंम्हा राव सरकार के तत्कालीन वित्त मंत्री जी श्री मनमोहन सिंह के प्रयासों से भारत में आर्थिक सुधारों के अन्तर्गत वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण की नीति लागू हुए जिसके परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर में अशातीत वृद्धि हुई। वैश्विक मंदी की अवधि में भी भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर प्रभावशाली रही। वर्ष 2007–08 में भारतीय अर्थव्यवस्था 9.3 प्रतिशत विकास दर 2008–09 में 6.7 प्रतिशत वर्ष 2009–10 में 8.4 प्रतिशत, वर्ष 2010–11 में 8.4 प्रतिशत तथा वर्ष 2011–12 में 6.9 प्रतिशत संवृद्धि दर प्राप्त करने में भारतीय अर्थव्यवस्था सफल रही है उपरोक्त लगातार महत्वपूर्ण विकास दर के लक्ष्यों को प्राप्त करने के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था आज भी संकट के दौर से गुजर रही है तथा विभिन्न वैश्विक संगठन और अर्थशास्त्री भारत को आर्थिक सुधारों के मार्ग पर लौटने का सुझाव दे रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोश ने भारत की विकास दर को वापस पटरी पर लाने तथा विकास दर के पूर्व लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ढाँचागत सुधारों के सुझाव दिये है। इन सुधारों में अधोसंरचना का विकास, वित्तीय समेकन तथा महँगाई पर नियंत्रण शामिल है।

IAS book January 22, 2020 भारत में ग्रामीण समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव : वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों से निपटने हेतु रणनीतियां मे वैश्वीकरण से तात्पर्य वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, प्रौद्योगिकी, विचारों, सूचनाओं तथा व्यक्तियों के व्यापक सीमा–पार विनिमय से है। भारत द्वारा स्च्ळ (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) सुधारों को अपनाने के पश्चात 1990 के दशक के प्रारंभ में महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन किए गए। इसने उत्पादकता, विकास, आय वितरण, प्रौद्योगिकियों, आजीविका की सुरक्षा तथा नीतियों को प्रभावित करते हुए भारतीय समाज में सभी व्यक्तियों के

कल्याण की प्रतिबद्धता अभिव्यक्त की। हालाँकि, इसके साथ वैश्वीकरण ने ग्रामीण भारतीय समाज के लिए कई वास्तविक खतरें भी उत्पन्न किए। भारत में ग्रामीण समाज पर वैश्वीकरण के प्रभावों में निम्नलिखित शामिल हैं: कृषिः वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, किसानों को पारंपरिक फसलों के स्थान पर निर्यात उन्मुख नकदी फसलों के उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया गया। कृषि आदानों के कुशल उपयोग ने कृषि को आर्थिक रूप से व्यवहार्य तथा लाभदायक बना दिया है।

अध्ययन का उद्देश्य

मूल योगदान वैश्वीकरण के दौर में युवाओं का विकास अंतर्दृष्टि को सामने लाना है। अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य नीचे सूचीबद्ध हैं।

- वैश्वीकरण के दौर में युवाओं का विकास का पता लगाना।
- परंपरा और आधुनिकता, वैश्विकता और स्थानीय युवाओं के बारे में अध्ययन करना।
- युवाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव का सामाजिक–आर्थिक व सांस्कृति प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की सीमा

वैश्वीकरण के दौर में युवाओं के विकास में वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव और सकारात्मक प्रभाव सीमित रहेगा। युवाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा जिससे 16–24 उम्र के युवाओं को शामिल किया गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्ययन पाठय, आलोचनात्मक, मूल्यांकनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विधियों का उपयोग करते हुए, माध्यमिक स्त्रोतों के माध्यम से वैश्वीकरण के दौर में युवाओं की स्थिति का पता लगाना हैं।

युवाओं पर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव और सकारात्मक प्रभाव के संपूर्ण अध्ययन पर भी केंद्रित है।

डेटा संग्रह

शोध अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों से डेटा एकत्र किया जाता है जिसका विश्लेषण किया। द्वितीयक स्रोत वह स्रोत जो वैश्वीकरण और युवाओं के संदर्भ पुस्तकों सहित पुरानी या गैर–मूल जानकारी प्रदान करता है। द्वितीयक स्रोतों में जीवनी, लेखक के कार्यों के महत्वपूर्ण अध्ययन, शोध पत्र और शोध अन्य वेबसाइटें भी शामिल हैं।

वैश्वीकरण और भारतीय युवा

वर्तमान भारतीय समाज में यह देखा गया है कि वैश्वीकरण के माध्यम से, युवाओं मे नौकरी के विकल्पों के लिए कुछ अवसर प्राप्त किए हैं और युवाओं के अधिकारों को मानवाधिकारों के हिस्से के रूप में मान्यता दी है।

कंप्यूटर और राज्य तकनीकों के विकास ने युवाओं को बेहतर, वेतन, फ्लेक्स टाइमिंग और घर और कॉर्पोरेट स्तर पर अपनी भूमिकाओं और पदों पर बातचीत करने की क्षमता प्रदान की।

दुनिया भर में अधिक ज्ञान और कुशल श्रमिकों और भाषाओं, संस्कषतियों और व्यावसायिक विधियों की गहरी समझ रखने वाले श्रमिकों की मांग हुई एक वैश्विक शिक्षा को उन मुद्दों के बारे में पढ़ाना चाहिए जो राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हैं, और पारिस्थितिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आर तकनीकी आधार पर परस्पर प्रणाली दुनिया तक पहुंच प्रदान कर रही है और बाद के विषयों को इस वैश्विक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

सार्वजनिक किए गए एक सर्वेक्षण के निष्कर्षों के अनुसार, हमारे किसी भी विश्वविद्यालय ने दुनिया के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में जगह नहीं बनाई है। इसलिए, यह सोचना उचित है कि अगर कुछ उज्ज्वल रैंक वाले विदेशी विश्वविद्यालय भारत आते हैं, तो हमारे पास अपने स्वयं के विकास के लिए घर पर तुलना करने के लिए उनके उत्कृष्टता के मानक होंगे।

हमारे युवाओं को यहां विदशी विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त करने से मनोवैज्ञानिक संतुष्टि मिलेगी और उसके बाद वे घरेलू मोर्चे पर जीवन का आनंद उठाकर देश की सेवा में योगदान दे सकेंगे।

भारत में एक विदेशी विश्वविद्यालय की स्थापना को प्रोत्साहित करने से देश को उत्कृष्टता के विश्व स्तरीय संकाय के मिलेगा। हम अपने संस्थनों और विश्वविद्यालयों में एक शोध संस्कृति विकसित करने में भी सक्षम होंगे जिसकी हमारे पास कभी है। इस तकनीकी युग में, भारत के लोग बहुत ही महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं। कुछ इसे विकास के चरण के रूप सख्ती से मानते है। मुख्य रूप से तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में जबरदस्त विकास और परिवर्तन रहा है।

भारत में विगत तीन दशकों के अन्तर्गत युवाओं पर सक्रियतावाद बढ़ा है और महिला–पुरूष दोनों पर एक समानता का दृष्टिकोण स्थापित करने का भी प्रयास चला हैं। जीवन, समाज, कार्य, मजदूरी, अधिकार व दायित्व के सन्दर्भ में महिला–पुरुष समानता की वैचारिकी को आगे बढ़ाया गया है जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था, राजनीतिक संरचना में एकरूपता विकसित हो सकती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के चहुँमुखी विकास की दृष्टि से सरकार के द्वारा नियोजित परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने के अनेक प्रयत्न किए गए। यहाँ ग्रामीण पुनर्निर्माण हेतु अनेक कार्यक्रम चलाए गए तथा एक के बाद एक पंचवर्षीय योजनाएं बनाई गई और उनके अनुरूप देश को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयत्न भी किया गया। देश में परिवर्तन लाने की दृष्टि से संविधान के माध्यम से भी अनेक प्रयत्न किए गए संविधान में समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता पर विशेष जोर दिया गया। यहाँ प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था अपनाई गई। देश के प्रत्येक नागरिक को वोट देने और चुनाव में भाग लेने का पूरा–पूरा अधिकार दिया गया।

अध्ययन का औचित्य

युवाओं पर पर वैश्वीकरण का प्रभाव के विषय में अनेकों अध्ययन किये गये हैं। इनके माध्यम से हम चरों को वर्णित करेंगे। जिन चरों को लेकर विभिन्न शोध सर्वेक्षण हो चुके हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि युवाओं की उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति, निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति, परिवारजनों का सहयोग, कार्यक्षेत्र, सहकर्मी व मित्रों का साथ, अधिकतम पर वैश्वीकरण का प्रभाव प्रदान करते हैं। युवाओं के जीवन में उच्चतम, भौतिक, सामाजिक–आर्थिक साधनों को प्राप्त करना चाहती हैं, जिससे वे अपने जीवन में अच्छे स्तर को प्राप्त कर सकें। उन्हे अपने जीवन में सामाजिक परिस्थितियों के माध्यम से अच्छे स्तर

को प्राप्त करने में सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं का सामना करना पड़ता है, जिनके कारण अच्छे स्तर की उपलब्धता में बाधकता उत्पन्न होती है। पुरातन समाज एवं आज के समाज में बहुत अंतर है। पहले जहाँ सीमित आवश्यकतायें थी व उनकी पूर्ति के साधन भी सीमित थे, पर आज तीव्र परिवर्तनों ने साधनों में प्रतिकूल बढोत्तरी की है, वहीं आवश्यकताओं में भी वृद्धि हुई है।

अध्ययन की उपादेयता

नई पीढ़ी की एक बड़ी त्रासदी यह है कि पाश्चात्य सभ्यता के अनुसरण के कारण हम भौतिक रूप से तो विकसित हो चुके हैं लेकिन आज भी परम्परागत सोच युवाओं के प्रति हमारे मस्तिष्क में जड़ जमाऐ हुए हैं, जहां आज हम सूचना क्रांति के दौर में जीवन–यापन कर रहे हैं। यदि वर्तमान परिस्थितियों में सामाजिक विचारधारा के प्रभाव का व्यक्ति के जीवन में व्याप्त अनियमित्ताओं एवं अस्वस्थता के कारणों का पता लगाया जा सकता है, तो उनके निवारण का भी प्रयास किया जा सकता है। यह भी ज्ञात किया गया है कि वर्तमान समाज में सामाजिक विचारधारा के किस स्वरूप का सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक संरचना पर पड़ता है।

वैश्वीकरण की क्रांति टैक्नोलॉजी प्रशासन, बैकिग, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज सेवा जैसे सभी क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वैश्वीकरण का तात्पर्य यह हैं कि आधुनिक समय में सम्पूर्ण विश्व एकाकार होने की दिशा में अग्रसर हैं तथा सम्पूर्ण विश्व ने ''वैश्विक गांव' का रूप धारण कर लिया हैं। राष्ट्रों की परम्परागत सीमाऐं समाप्त होती प्रतीत हो रही हैं। वर्तमान समय में व्यक्ति अपने राष्ट्र के विषय में चिन्तन नहीं करता, वरन वह अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के सम्बन्ध में भी चिन्तन एवं मनन करता हैं। इस प्रकार से हम देखते हैं कि एक राष्ट्र में घटित होने वाली घटनाऐं शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर लेती हैं (Molcom water 1995:3) शिक्षा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, खेल तथा अर्थव्यवस्था एवं संचार के क्षेत्र में इतने क्रांतिकारी परिवर्तन हुये हैं कि उन्होनें वैश्वीकरण की प्रक्रिया को नवीन गति एवं दिशा प्रदान की हैं।[8]

वैश्वीकरण का वैसे तो सभी सामाजिक समूहों पर प्रभाव पड़ा है पर उसमें सबसे ज्यादा युवाओं पर ही सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक स्तर पर प्रभावित हुई हैं। इसके कारण युवाओं पर को पारम्परिक बन्धनों से मुक्ति प्राप्त हुई हैं। और वह सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के साथ कदम ताल मिला रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण महसूस किया जाने लगा है कि युवाओं को इसने ने तमाम चीजे व सुविधा मुहैया करायी हैं जिनसे उन्हे आज तक वचित रखा गया था। आज युवा राजनीति में सक्रिया भागीदारी के साथ साथ कारखानों एवं फैक्ट्रियों में भी काम कर रही है। भारत में कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है और देश की लगभग 70% जनसंख्या अपनी आजीविका और जीवन निर्वाह के लिए कृषि और इसके सहायक व्यावसायों में लगी हुई है। आज युवा कृषि के परम्परागत तरीकों को छोडकर आधुनिक तरीके अपना रहे हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त कथनों को संक्षेप में कहने के लिए, यह कहना गलत नहीं हो सकता है कि वैश्वीकरण वैश्विक व्यापार का पर्याय नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है। वैश्वीकरण सभी समाजों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने में विभिन्न प्रकार की जटिल प्रवृत्तियों को प्रस्तुत

करता हैं मुख्य रूप से, वैश्वीकरण का उपयोग प्रत्यक्ष विदेशी विनेश, व्यापार, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एकीकरण है, जिसे आर्थिक वैश्वीकरण कहा जाता है, लेकिन यह शिक्षा, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि जैसे स्तरों पर समान रूप से है। ये प्रभावी है। जिसे हम सांस्कृतिक वैश्वीकरण, सामाजिक वैश्वीकरण, शैक्षिक वैश्वीरकण से संदर्भित करते हैं। भारत में विगत तीन दशकों के अन्तर्गत महिला सक्रियतावाद बढ़ा है और महिला–पुरूष दोनों पर एक समानता का दृष्किोण स्थापित करने का भी प्रयास चला हैं। जीवन, समाज, कार्य, मजदूरी, अधिकार व दायित्व के सन्दर्भ में महिला–पुरूष समानता की वैचारिकी को आगे बढ़ाया गया है जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था, राजनीतिक संरचना में एकरूपता विकसित हो सकती हैं। आज युवाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूप में देखने को मिल रहे है आज युवा आत्मनिर्भर हो रहा हैं। आधुनिक सोच के साथ अपने व्यवसायों को करने के तरीको में क्रान्तिकारी बदलाव लेकर आ रहे है जो आज की सूचना एवं प्रोद्योगिकी के कारण सक्षम हो पाया है वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव भी युवाओं पर देखे जा सकते है। आज युवाओं में जो लाभदायक परम्परागत मूल्य थे उनको भी त्याग दिया है। जो उनकी क्रन्तिकारी सोच का परिणाम है सक्षेप में तीन दशको के पश्चात युवाओं पर वैश्वीकरण के व्यापक प्रभाव देखे जा सकते है।

संदर्भ

1. प्रकाश, रवि. (2005). वैश्वीकरण एवं समाज. शेखर प्रकाशनः इलाहाबाद. पृष्ठ **315.**
2. इण्डा, जान्थन सेस्वीयर., रीनाल्टी. (2002). एन्थ्रीपोलॉजी ऑफ ग्लोबलाइजेशन. ए, रीडर आक्सफोर्ड ब्लैक वेल पब्लिशर्स. पृष्ठ **2.**
3. राबट्सन, आर. (1998). ग्लोबलाइजेशन, सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल क्लचर. सेज पब्लिकेशन्सः लन्दन. पृष्ठ **64.**
4. फ्राइडमैन, थॉमस. (1999). ग्लोबलाइजेशन, द लेक्सस एण्ड द ओलिव ट्री न्यूयार्क. फार स्ट्रौस जिराक्स. पृष्ठ **110.**
5. पाण्डेय, रवि प्रकाश. (2004). कन्क्लूजीव सिनॉप्सीस ऑफ इण्टरनेशनल सेमिनार ऑन ग्लोबलाइजेशन पावर्टी. हेल्ड ऑन 4–6 दिसम्बर. आर्गनाइज्ड वाई.एम.जी. काशी विद्यापीठः वाराणसी. पृष्ठ **1.**
6. Government of India. (1997-2002). Approach Paper to the Ninth five Year Plan: Planning Commission: New Delhi.
7. Green, A. (2006). Education, globalization, and the nation state. in laubder H, Brown P, Dillabough J, and Halsey A H (eds). *Education, globalization and social change*. Oxford University Press: Oxford.
8. *International Journal of Applied Reseach*. http://www.allresearchjournal.com.